Volume 1; Issue 2
April to Jun 2025

E-ISSN: 3048-8699

International Journal of History and Culture

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly International Research Journal

International Journal of History and Culture
E-ISSN: 3048-8699
https://www.journalofhistory.in/
Volume 1; Issue 2; July to September 2025; Page No. 1-10
Peer Review, Indexed and Refereed Journal
Received Date: 09-08-2025, Accepted Date: 17-08-2025
Published Date: 18-08-2025

मुस्लिम विवरणों में प्रतिबिम्बित भारत की सांस्कृतिक स्थितिः सुलेमान एवं अबूजैद हसन सिराफी के विशेष सन्दर्भ में

डॉ0 रागिनी राय
असिस्टेंट प्रोफेसेर
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
ईश्वर शरण पी० जी० कालेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उ०प्र०
प्रिन्स कुमार तिवारी
शोध छात्र
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,
ईश्वर शरण पी० जी० कालेज,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उ०प्र०

सारांश

भारतीय इतिहास के संक्रमण काल (पूर्व मध्यकाल) में आये मुस्लिम यात्रियों ने जो विवरण दिया है उनमें पहला नाम सुलेमान का है जिसने भारत सम्बन्धी अपना विवरण सिलसिलात–उत–तवारीख (851 ई0) नामक ग्रन्थ में दिया। इसके लगभग आधी शताब्दी बाद (916 ई0) अबूजैद हसन सिराफी ने इसी नाम से अपना विवरण देकर सुलेमान के कार्य को आगे बढ़ाया। इन विवरणों से अरब और भारत के सम्बन्धों एवं तत्कालीन (9वीं–10वीं शताब्दी ई0) भारत की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति की जानकारी प्राप्त

होती है। इस कालखण्ड के भारतीय ग्रन्थ (संस्कृत–प्राकृत) भी इन विवरणों से उद्धृत जानकारी को परिपुष्ट करते हैं।

बीज शब्द– *राजनीतिक, संक्रमणकाल, मुस्लिम विवरण, सांस्कृतिक।*

प्रस्तावना

प्राचीन भारत के विषय में जानने के लिए प्रमुखतया साहित्यिक, पुरातात्विक एवं विदेशी यात्रियों के विवरण ही हमारे स्रोत है। विभिन्न कालखण्डों में अलग–अलग देशों से आये विदेशी यात्रियों ने अपनी यात्रा का विवरण दिया है जिनसे हमारी प्राचीन इतिहास सम्बन्धी जानकारी समृद्ध हुयी है, इन विदेशी यात्रियों में क्रमशः यूनानी, चीनी एवं मुस्लिम यात्री प्रमुख हैं।

मुस्लिम यात्रियों में सुलेमान सौदागर एवं अबूजैद हसन सिराफी, का विवरण **'सिलसिलात–उत–तवारीख'** नाम से हमें प्राप्त होता है। सुलेमान सौदागर मूलतः एक व्यापारी था जो अपनी व्यापारिक यात्रा में भारतीय समुद्र तटों के चक्कर लगाया करता था, इस तरह वह न केवल भारत वरन् चीन, दक्षिण–पूर्वी एशिया के द्वीपों, श्रीलंका इत्यादि के बारे में जानकारी देता है।[1] अबूजैद हसन सिराफी कभी भारत नहीं आया, उसने भारत के समुद्री तटों पर यात्रा करने वाले अन्य यात्रियों से जो कुछ सुना उसे अपने ग्रन्थ में लिपिबद्ध कर दिया।

इस कालखण्ड(9वीं–10वीं शताब्दी) में आये मुस्लिम यात्रियों ने भारतीय राजनीतिक स्थिति के बारे में जो बताया उसमें सुलेमान के अनुसार ''संसार में केवल चार बादशाह हैं, वह अरब के बादशाह को सबसे बड़ा तथा क्रमशः चीन के बादशाह, रोम के बादशाह और भारत के बादशाह (राजा बल्हरा) को स्थान देता है।''

उसने भारत के समुद्र तट पर स्थित चार बड़े–बड़े भारतीय राजाओं का उल्लेख किया है[2] जिनमें सबसे पहला नाम बल्हरा (वल्लभराय) का है जो सब राजाओं का राजा है उसके देश का नाम कुमकुम (कोंकण) है, जो समुद्र के किनारे है। भारत के सब राजाओं से बढ़कर यहां के राजा अरबों से प्रेम करते हैं, इनके चांदी के सिक्कों का नाम तातरिया है जिस पर सन् की तारीख उस बादशाह के समय से होती है जो राज्य का आदि तथा सर्वमान्य राजा होता है, यहां के

बादशाहों की आयु बहुत हुआ करती थी। वे प्रायः पचास वर्षों तक शासन करते हैं। सुलेमान के बल्हरा से तात्पर्य वल्लभराय से है जो राष्ट्रकूट राजाओं की उपाधि थी तथा इस वंश के राजा काफी लम्बे समय तक शासन करते थे।

बल्हरा के बाद जुरुज (गुर्जर) के बादशाह का उल्लेख करता है, सुलेमान के अनुसार ''इस राजा के पास सेनाएं बहुत है, इसके पास सर्वोत्तम प्रकार के घोड़े हैं जैसा भारत वर्ष में किसी के पास नहीं है।'' पहेवा अभिलेख (882—883 ई0) में प्रतिहार राजाओं के समय घोड़ों के क्रय—विक्रय में लगने वाले बाजारों का उल्लेख है, सुलेमान के अनुसार ''वह अरबों को बहुत बड़ा शत्रु है।'' उसका राज्य जमीन की जिह्वा (समुद्र से निकली हुयी भूमि, प्रायद्वीप) पर है, भारत वर्ष में कोई और राज्य चोरी से इतना अधिक सुरक्षित नहीं है जितना वह राज्य है। उसके राज्य में ऊँट तथा पशु बहुत हैं। इसके अतिरिक्त ऊँट प्रायः राजस्थान में पाये जाते हैं जहाँ से प्रतिहार राजाओं का सम्बन्ध था। सुलेमान के जुरुज/जजर से आशय गुर्जर प्रतिहार वंश से है। और प्रतिहार राजाओं का प्रायः अरबों से शत्रुता थी। **अलबिलादुरी**[3] के अनुसार ''प्रतिहार नरेश नागभट्ट ने अरब आक्रान्ता जुनैद को हराया था'' इसीलिए **ग्वालियर अभिलेख** में इसे ''म्लेच्छों (अरबों) से पृथ्वी का उद्धार करने वाला कहा गया है।

सुलेमान ने ताफ़क के बादशाह को तीसरा बादशाह उल्लिखित करता है। उसके अनुसार ''इस बादशाह का देश बहुत छोटा है, यहां का राजा सबसे मेल रखता है और अरबों से प्रेम करता है।'' यहां की स्त्रियां बहुत सुन्दर है। ताफ़क शब्द के आशय में विद्वानों में मतैक्यता का अभाव है।

अन्त में रुहमा के राजा का उल्लेख करता है, सुलेमान बताता है कि उसका जुरुज एवं बल्हरा के राजा से प्रायः संघर्ष होता रहता है, उसके पास जुरुज, ताफ़क एवं बल्हरा से बड़ा लश्कर (सेना) है जिसमें 50,000 हाथी है। उल्लेखनीय है कि हाथी की अधिकता भारत के पूर्वी हिस्से (बंगाल, उड़ीसा) में है और चूंकि वह प्रतिहारों (जुरुज) एवं राष्ट्रकूटों (बल्हरा) से संघर्षरत था अतः सुलेमान के रूहमा से आशय बंगाल के पालवंश से है।

इस प्रकार सुलेमान का विवरण 8वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य कान्यकुब्ज पर काबिज होने के लिए पाल, प्रतिहार एवं राष्ट्रकूट वंश के शासकों के मध्य

चलने वाले त्रिपक्षीय संघर्ष की ओर इंगित करता है।

सुलेमान बताता है कि जब राजा किसी पड़ोसी राज्य पर अधिकार करता है[4] तो वह पराजित वंश के किसी व्यक्ति को राजा बना देता है जो विजेता के नाम पर शासन चलाता है। प्राचीन काल में समुद्रगुप्त की ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति एवं आगे चलकर अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण के प्रति अपनायी गयी नीति इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है।

भारत में **दोषी की परीक्षा, दण्ड विधान** एवं **न्याय** के विषय में प्राचीन काल के स्मृतिकारों ने लिखा है[5]–

करौ विमृदितव्री हेर्लयित्वा ततो न्यसेत। सप्ताश्वत्थस्य पत्राणि तावत्सूत्रेण वेष्टयेत।। 103।। (याज्ञवल्क्य स्मृति)

तस्येत्युक्तवतों लौहं पंचाशत्पलिकं समम्। अग्निवर्णं न्यसेत्पिण्डं हस्तयोरूभयोरपि।।105।। (याज्ञवल्क्य स्मृति)

अर्थात् दोषी के दोनों हाथों में व्रीहि (चावल) मलवा कर पीपल के सात पत्रों को सात सूत्रों में वेष्ठित करें तथा उसके दोनों हाथों पर पचास पल के बराबर अग्निवर्ण का (लाल जलता हुआ) लौह पिण्ड रखें।

सुलेमान ने गरम दहकते लोहे एवं खौलते पानी से दोषियों की परख का उल्लेख किया है[6] उसके अनुसार ''भारत वर्ष में जब कोई मनुष्य किसी दूसरे पर ऐसा आरोपण करता है जिसमें वह मृत्यु का अधिकारी है तो दोषी के हाथ पर सात पत्तियां रखकर दहकते हुए लोहे का टुकड़ा रखा जाता है। वह इस टुकड़े को लेकर टहलता रहता है बाद में फेंक देता है फिर चमड़े के थैले में उसका हाथ डाला जाता है और उस पर बादशाह की मुहर लगा दी जाती है तीन दिन बाद जब वह इस बात का परिचय देता है कि उसे कुछ कष्ट नहीं है तब उसका हाथ खोल दिया जाता है तथा उसे मृत्यु के घाट नहीं उतारा जाता है।'' इसके अतिरिक्त खौलते पानी में पड़े लोहे के छल्ले को हाथ डालकर निकालने से भी दोषी की पहचान की प्रथा थी।

सुलेमान भारत की **न्याय व्यवस्था**[7] के बारे में बताता है कि यहां हिन्दू न्यायाधीश बैठकर अभियोगों का निर्णय करते हैं जब कोई कैद किया जाता है तब उसे सात दिनों तक अन्न–पानी कुछ भी नहीं दिया जाता था, 'सारे भारत में व्यभिचार का दण्ड दोनों अपराधियों के लिए वध है।

अबूजैद ने भारत वर्ष में **राज्याभिषेक**[8] के समय की जाने वाली प्रथाओं का उल्लेख किया है वह बताता है कि ''यहाँ राजा बनाने के समय यह प्रथा है कि राजा के रसोई घर में चावल पकाये जाते हैं और तीन–चार सौ आदमी अपनी इच्छा से वहां आते हैं, राजा के सामने एक पत्ते पर चावल रख दिया जाता है राजा उसमें से थोड़ा सा उठाकर खाता है फिर एक–एक आदमी राजा के सामने जाता है राजा उनको थोड़ा–थोड़ा चावल अपने सामने से देता जाता है, ये सब आदमी राजा के साथी होते हैं जब राजा मरता है तब ये सभी उसके साथ उस दिन आग में जल जाते हैं।'' इस सन्दर्भ में दक्षिण भारत में (चोलों के समय) प्रचलित गरूड़–सहवासी परम्परा का उल्लेख किया जा सकता है। इसमें जब राजा की मृत्यु होती थी तो उसके मन्त्री भी मृत्यु का वरण करते थे।

सुलेमान भारत में **सतीप्रथा**[9] का उल्लेख करता है कि ''जब मुर्दे जलाये जाते हैं तो उनकी रानियां भी सती हो जाती है परन्तु यह केवल उनकी इच्छा पर है, इसमें कोई जबरदस्ती नहीं है।'' **राजतरंगिणी**[10] में भी उल्लिखित है कि ''एक रानी तो रथ में बैठी सती होने जा रही थी, इतने में दूसरी उसमें पहले चिता पर चढ़ गयी।'' उल्लेखनीय है कि भारत में सतीप्रथा पूर्व में भी प्रचलन में भी उदाहरणार्थ– भानुगुप्त के एरण अभिलेख में गोपराज की पत्नी के सती होने का उल्लेख तथा प्रभाकरवर्धन की मृत्यु पर यशोमती का सती होना। सुलेमान भारतीय राजाओं के विषय में बताता है कि ''वे अपनी रानियों से पर्दा नहीं कराते, जो कोई उनके दरबार में जाता है वह उन्हें देख सकता है।''[11]

अबूजैद भारतीय **संस्कृति एवं रीति–रिवाजों** के बारे में बात करता है कि ''यहां दो आदमी भी एक साथ मिलकर नहीं खाते, एक साथ बैठकर खाने को वे अनुचित समझते हैं।''[12] उल्लेखनीय है कि भारत में खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज इत्यादि में वर्ण एवं स्थान के आधार पर विभेद रहा है सम्भवतः अबूजैद का संकेत उसी तरफ है। सुलेमान ने भारतीय फलों की चर्चा करते हुए आश्चर्य व्यक्त किया कि ''भारत में सब फल तो है पर छुहारे का वृत्त नहीं है।''[13]

सुलेमान के अनुसार ''भारत में जब लोग विवाह का विचार करते हैं तो लड़की और लड़के वाले एक–दूसरे के यहां सन्देशा भेजते हैं, फिर उपहार भेजते हैं, विवाह में सामर्थ्य के अनुसार भेंट दिया जाता है।[14] भारत के लोगों का पहनावा

यह है कि एक कपड़ा कमर में बांधते हैं और दूसरा ऊपर डाल देते हैं, दक्षिण भारतीय तटों के निवासियों के सम्बन्ध में उसने लिखा है कि ''वे केवल एक लंगोटी बांधते हैं।''[15] भारत के लोग दोपहर को भोजन करने के पूर्व नहाते हैं, मुँह अच्छी तरह से साफ करते हैं बिना मुंह साफ किये भोजन नहीं करते। यहां कतिपय सामान्य आदमी तीन–तीन हाथ की दाढ़ियां रखते हैं, जब कोई मरता है तब उसके सम्बन्धी दाढ़ी एवं मूंछ मुड़ाते थे।[16]

सुलेमान ने अपने विवरण में हरकन्द (बंगाल की खाड़ी), दलारोवी (खम्मात की खाड़ी/अरबसागर) सरनद्वीप (श्रीलंका), मालद्वीप इत्यादि जलस्थलों तथा इनके मध्य 1900 टापूओं का उल्लेख किया है इन टापूओं में अम्बर, ऊद (सुगन्धित लकड़ी), शंख, कपूर, नारियल, कौड़िया तथा बेंत बहुतायत मात्रा में पाये जाते हैं। ये टापू (द्वीप) नारियल के वृक्षों से भरे पड़े हैं यहां के लोग बड़े कारीगर हैं वे नारियल के छालों की पूरी कमीज, कली, बॉह और जेब सहित सब एक ही साथ बना लेते हैं, नौकाएं व घर भी इन्हीं वृक्षों से बना लेते हैं।[17]

इन टापूओं पर मुद्रा के रूप में कौड़ियों का प्रचलन था। उल्लेखनीय है कि 14वीं शताब्दी ई0 में आये मोरक्को (उत्तरी अफ्रीका) के यात्री इब्नबतूता ने अपने ग्रन्थ (रेहला) में मालद्वीप के टापूओं का हाल लिखते हुए बताया है कि इन टापूओं में कौड़ियों का चलन था। सुलेमान ने कौड़ियों को रूहमा (बंगाल का पाल वंश) राज्य का मूलधन बताया, सम्भवतः कौड़ियों का प्रचलन बंगाल में लम्बे समय तक था क्योंकि 18वीं शताब्दी ई0 के ग्रन्थ **सियारूल मुत्खैरिन** में बंगाल के विषय में लिखा है कि ''यहां लेन–देन कौड़ियों के माध्यम से होता है ये कौड़ियां वे समुद्र पार से लाते थे।''[18] गुप्तकाल में आये चीनी यात्री फाह्यान ने भी भारत का सामान्य व्यापार कौड़ियों के माध्यम से बताया। सुलेमान ने बल्हरा के राज्य में सिक्कों के रूप चांदी के तातरिया के प्रचलन की बात की, ज्ञातव्य है कि इस काल में सामन्तवाद के प्रभाव एवं व्यापार–वाणिज्य के ह्रास के कारण मुद्राओं की कमी देखने को मिलती है।

अबुजैद बताता है कि ''यहां पानी बहुत बरसता है और उसी से यहां की खेती होती है।''[19] उल्लेखनीय है कि भारत में कृषि को 'मानसून का जुआ' कहा जाता है, हालांकि पूर्व मध्यकाल में कतिपय ऐसे विवरण मिलते हैं जिसमें कृत्रिम सिंचाई का भी उल्लेख है, इस काल में घटियन्त्र (चरखा) का प्रचलन हो

गया था इसके अतिरिक्त गाहड़वालों के मनेर अभिलेख में जलकर का उल्लेख है।

अबूजैद ने मुल्तान की प्रसिद्ध मूर्ति के बारे में लिखा है[20] कि कैसे अरबी लोग इस मूर्ति को तोड़ने की धमकी देकर राजपूत राजाओं से अपनी रक्षा करते थे, आगे आने वाले अन्य अरबी–फारसी यात्रियों ने भी मुल्तान की इस प्रसिद्ध मूर्ति के बारे में बताया है। इसके साथ ही अबुजैद मन्दिरों में देवदासी प्रथा[21] का उल्लेख करता है आगे चलकर अलबरूनी ने भी मन्दिरों में देवदासी प्रथा का उल्लेख किया है। इस सन्दर्भ में पूर्व में भी हमें **जोगीमारा अभिलेख**[22] में सुतनका नामक देवदासी का उल्लेख प्राप्त होता है।

सुलेमान भारतीय सन्यासियों[23] के बारे में बताता है कि वे जंगलों एवं पहाड़ों में रहा करते हैं, ऐसे लोग सर्वसाधारण से कम ही मिलते हैं तथा ये जंगली एवं फलों पर ही जीवन व्यतीत करते हैं, इनमें कुछ लोग सदैव नग्न रहा करते हें तथा कुछ चीते की खाल तथा इसी प्रकार की अन्य वस्तु शरीर पर डाले सूर्य के सम्मुख खड़े रहते हैं।

अबूजैद के अनुसार भारत में पुनर्जन्म[24] पर इतना विश्वास है कि व्यक्ति स्वयं को जलाने के लिए राजा की आज्ञा लेता है और अपने आपको जलती चिता में झोंक देता है। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है वैदिक काल से ही भारतीय का पुनर्जन्म में दृढ़ विश्वास रहा है हालांकि पूर्व मध्यकाल में पुरुषों का स्वेच्छा से मृत्यु के वरण करने के पीछे कतिपय कारण रहे हैं, न केवल पुनर्जन्म वरन् किसी राजा से पराजित होने पर शासक आत्महत्या कर लेता था जैसे कुडलसंगमम युद्ध में चोलों से पराजित होने पर चालुक्य (कल्याणी) शासक सोमेश्वर ने तुंगभद्रा नदी में डूबकर जान दे दी। ह्वेनसांग बताता है कि ''प्रयाग में प्राण त्याग करना पुण्य समझा जाता था इसीलिए लोग यहां मरने आया करते थे।'' इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि कलचुरि शासक गांगेयदेव जिसने अपनी शत रानियों के साथ यहां शरीर त्याग किया[25] तथा चन्देल शासक धंग ने यहां प्राणोत्सर्ग किया।[26] अबूजैद बताता है कि ''भारतवासी ज्योतिष के क्षेत्र में चीनी लोगों से ज्यादा योग्यता रखते हैं।''[27]

भारतीय शिल्पकला के बारे में सुलेमान बताता है कि ''रूहमा राज्य में ऐसा कपड़ा होता है जैसा अन्यत्र नहीं है, वह कपड़ा छोटी अंगूठी के घेरे में से गुजारा जा सकता है।''[28]

निष्कर्ष

इस प्रकार हमारे इन दोनों प्रारम्भिक मुस्लिम यात्रियों ने अपने विवरण में भारत की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दशा का जो खाका खींचा है उससे 9वीं–10वीं शताब्दी ई0 के भारतीय इतिहास को समझने में आसानी हुयी है।

सन्दर्भ

1. नदवी, सैयद सुलेमान, अरब और भारत के सम्बन्ध, अनुवादक– बाबू रामचन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज, 2018, पृ0 22–23
2. सिलसिलात–उत–तवारीख, सुलेमान कृत, अनुवादक– महेश प्रसाद 'साधु' (सुलेमान सौदागर), सम्पादक– गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, नागरी प्रचारिणी सभा, 1978, पृ0 49–53
3. द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया ऐज टोल्ड बाइ इट्स ओन हिस्टोरियन्स, वाल्यूम 1, टर्बनर एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1867, पृ0 126
4. सिलसिलात–उत–तवारीख, सुलेमान कृत, अनुवादक– महेश प्रसाद 'साधु' (सुलेमान सौदागर), सम्पादक– गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, नागरी प्रचारिणी सभा, 1978, पृ0 78–79
5. व्यवहाराध्याय, याज्ञवल्क्य स्मृति, संपादक– डॉ0 गंगा सागर राय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 2020, पृ0 241–242
6. सिलसिलात–उत–तवारीख, सुलेमान कृत, अनुवादक– महेश प्रसाद 'साधु' (सुलेमान सौदागर), सम्पादक– गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, नागरी प्रचारिणी सभा, 1978, पृ0 74–75
7. पूर्वोद्धृत, पृ0 81
8. द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, ऐज टोल्ड बाइ इट्स ओन हिस्टोरियन्स, वाल्यूम 1, टर्बनर एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1867, पृ0 9
9. नदवी, सैयद सुलेमान, अरब और भारत के सम्बन्ध, अनुवादक– बाबू रामचन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, 2018, पृ0 26
10. राजतरंगिणी, कल्हणकृत, संपादक– पाण्डेय, रामतेज शास्त्री, पण्डित पुस्तकालय, काशी (1960), 8/367
11. द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, ऐज टोल्ड बाइ इट्स ओन हिस्टोरियन्स, वाल्यूम 1, टर्बनर एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1867, पृ0 11

12. नदवी, सैयद सुलेमान, अरब और भारत के सम्बन्ध, अनुवादक– बाबू रामचन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, 2018, पृ0 29
13. पूर्वोद्धृत, पृ0 27
14. सिलसिलात–उत–तवारीख, सुलेमान कृत, अनुवादक– महेश प्रसाद 'साधु' (सुलेमान सौदागर), सम्पादक– गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, नागरी प्रचारिणी सभा, 1978, पृ0 79
15. नदवी, सैयद सुलेमान, अरब और भारत के सम्बन्ध, अनुवादक– बाबू रामचन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, 2018, पृ0 27
16. सिलसिलात–उत–तवारीख, सुलेमान कृत, अनुवादक– महेश प्रसाद 'साधु' (सुलेमान सौदागर), सम्पादक– गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, नागरी प्रचारिणी सभा, 1978, पृ0 81
17. पूर्वोद्धृत, पृ0 23–25
18. पूर्वोद्धृत, पृ0 94–95
19. नदवी, सैयद सुलेमान, अरब और भारत के सम्बन्ध, अनुवादक– बाबू रामचन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, 2018, पृ0 29
20. द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, ऐज टोल्ड बाइ इट्स ओन हिस्टोरियन्स, वाल्यूम 1, टर्बनर एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1867, पृ0 11
21. नदवी, सैयद सुलेमान, अरब और भारत के सम्बन्ध, अनुवादक– बाबू रामचन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, 2018, पृ0 29
22. जोगीमारा अभिलेख, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का वार्षिक प्रतिवेदन, 1903–04 : 123–131
23. सिलसिलात–उत–तवारीख, सुलेमान कृत, अनुवादक– महेश प्रसाद 'साधु' (सुलेमान सौदागर), सम्पादक– गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, नागरी प्रचारिणी सभा, 1978, पृ0 76–77
24. नदवी, सैयद सुलेमान, अरब और भारत के सम्बन्ध, अनुवादक– बाबू रामचन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज, 2018, पृ0 28
25. कार्पस इन्सक्रिप्शनम् इण्डिकेरम, जिल्द 4, पृ0 293, श्लोक 12
26. एपिग्राफिया इण्डिका जिल्द 1, पृ0 146, श्लोक 55
27. सिलसिलात–उत–तवारीख, सुलेमान कृत, अनुवादक– महेश प्रसाद 'साधु' (सुलेमान सौदागर),

सम्पादक– गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा, नागरी प्रचारिणी सभा, 1978, पृ0 84

28. पूर्वोद्धृत, पृ0 54